

॥६॥५॥४॥

— 114 P. 14. 125 114

Handwritten text in a cursive script, likely a list or index, with several lines of text and some markings.

[illegible]

WIKI, WIKI

8. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 8

॥ श्री

श्रीगणपतये नमः ॥ ॥ हेरं वं भुवनस्य शीर्षं मधुसिद्धं संसक्तं गहं बुद्धं गौरीहं कं मलप्रकाशतरणिं विष्णुं दवीपावकम् । दृष्ट्वा दैरिक्तु
लांतकं सुमनसां श्रीसिद्धिं बुद्धिं प्रदं सिंदूरारुणं गंडयुग्ममनिशं भातौषधीशं भजे ॥ १ ॥ प्रभाकरं सर्वजगत्प्रभाकरं त्रयीतनुं ब्रह्महरीम्
रत्नकं । लोकस्य सच्चिस्थितिनाशकारकं वंदे ग्राह्यधीशमभीष्टसिद्धये ॥ २ ॥ श्रीविनामशिदैववित्तनुभयोऽनंतो द्विजमाश्रणी भूमिमं
उत्तमो भिभूषणिकुलैः संमानितः सादरम् । सर्वाधीशगदीविचारवतुरो गर्भमुनिः स्योतिषे देशे स्य विदर्भतो बुधवरो वागणसीमादसत् ॥
३ ॥ तत्सूनुगीतातार्णवैकतरणिः श्रीनीलकंठो बुधोऽभूद्देहस्य तितर्कशास्त्रनिपुणोऽभूत्सीपमाता र्जितः । ज्योतिश्शास्त्रमिदं त्रिधा समक
तेद्यद्योऽरा नंदं श्रीशेखादिसरस्वतीं सविहृतिं शिष्यान्सहोऽध्यायिपत् ॥ ४ ॥ गोविंदं हरकरं दपादसरोजभंगसंसाहभूदुजगत्तमवीप्र
दीपः । ज्योतिर्नयप्रचुरदिप्पराककुत्तिः श्रीगार्ग्यवंशतिहको गणकावतंसः ॥ ५ ॥ तस्माद्भूवन्विबुधेऽप्यकल्याणयः सुता ज्योतिषशा
स्त्रनिष्ठाः । ज्योत्स्नोऽनंतोऽनुवमाधवारण्यश्चितामलिस्तारतो विपश्चिन् ॥ ६ ॥ तेषु श्रीगणनाथभक्तिविसिद्धिदा गणोपाधवः शिष्यप्रार्थनया
ररीकृतवचाः संहिष्यटीकाकृतौ । श्रीगोविंदगुरोः प्रणाम्य वरणां भोजनं कुर्वेत्ततो लब्ध्वा बोधसंबन्धितामहं कर्ते सतातिके व्याकृतिम् ॥ ७ ॥ श्रीगो
स्तिटीका महतीति मूलं तत्स्थं विचारं मुनि संमतिं च । हित्वा हर्मसां शिषु बोधिनीतां संसाविवेकं स्पर्करो मिटीकाम् ॥ ८ ॥ तत्रतीवत्सकलमुनिश्री

ॐ माग्यवंशतिलको निखिलविद्वद्देव शमुकुटहीरोऽनंतश्रोतिर्वितनुजः श्रीनीलकंठः श्रोतिर्वित्संज्ञातं च वर्धतं च प्रभूतं च रूपप्रकरावध्यात्मकस्य
जीर्णताजिकशास्त्रस्य प्रथमं प्रकरणं संज्ञाविवेकनामकं सधः सहस्रत्फलोपयिकं वंशस्थविसर्गं नेकसुप्रव्यक्तं दः सहितं चिकीर्षुरनेकज्ञमोद
जितदुर्गतसंभूतविघ्नं सकाममाये निविघ्नग्रंथसमाधिप्रवयगमनाभ्यां शिष्टाधारपरिपालनाय च विशिष्टेष्टदेवतानां गणेशसूर्यमित्यराण
कमलानां नमस्काररूपं मंगलमाखरन्विषयप्रयोजनसंबंधाधिकारिणाञ्च सूत्रय-कर्तव्यं ताजिकग्रंथमुपजातिकं याप्रतिज्ञा नीते प्रताप्येति श्री
नीलकंठः सूक्तिभिस्तताजिकं विविनक्तीत्यन्वयः । श्रीरभ्यापनादिपुराविशिष्टाशोभातया युक्तो नीलकंठनामा ग्रंथस्तूक्तिभिः सुष्ठुरोभनाभिः
सुप्रव्यक्तं दो निर्मितमिह सूक्तिभिः स्ववचनैः कृत्वा तत्प्रसिद्धं समं संहतिनिर्मितं ताजिकं ताजिकनामकं शास्त्रं विविनक्ति विचारयति निर्मातीत्यर्थः ।
तत्पदेन निर्मूलत्वशंका निरस्ता विधिरष्टध्यावे इति रौधादिकी धातुर्विपूर्वको विचारणार्थः । किं कृत्वा । हेरं वंस्वकुलाराध्यतमं देवं गणपते प्रण
म्य कायवाङ्मनोभिर्नत्वाऽतएव प्रशस्तप्रयोगः । अथोगणपति नमनानंतरं दिवाकरं सूर्यं प्रणम्य । तथा गुप्तेः पितुरनंतस्यानंतनामः पशं बुजं चर
ण कमलं प्रणम्य । तात्प्राये लोकवचनं पशं बुजे इत्यर्थः । अत्र गणेश नतिर्विघ्नं साध । सूर्यनंतिः कालज्ञानाय गुरुनति नभीष्टवस्तु लब्धये
। अत्र ग्रंथे र्गग्रंथेभ्यः शीघ्रप्रवृत्तिं दर्शयति । कोटशं ताजिकं । सूरिमनः प्रसादकं तत्सूर्यः पंडिताः विद्वान्सूरिः कृती कृष्टिरित्यमरः । ते वा न सो

नी. २

२

तिरसास्त्राभिज्ञास्तेषां मतसः प्रसादं करोति क्विंतं। जीर्णताजिकं ग्रंथं ह्यार्यं कंठोभिरुपनिबद्धं पुस्तकं निरपेक्षं पाठस्य दुष्करत्वात् कृत्वा
ठित्यात्प्रमेयात्पलायं दुरधिगमाः। एतत्तु ताजिकं दोषसंघादित्यात्सूरिमनः प्रसन्नं ताकारिह्यस्ति। इति श्लोकार्थो व्याख्यातः। अत्र ग्रंथे रा
शिस्वरूपं च वगीस्वरूपं चोत्तमयोगसहस्रं सांगवर्षफलभावविचारदशा विभागगमनागमनाद्यनेकप्रश्नरूपास्तजिकपदार्थाः प्रतिपा
द्यत्वेन विषयभूताः। एषां पदार्थानां ताजिकं ग्रंथं स्पष्टप्रतिपाद्यप्रतिपादकभावः संबंधः। प्रयोजनं भूतभविष्यद्वर्तमानशुभाशुभकथनं। उक्तं
वनारदेन। प्रयोजनं तु जगतः शुभाशुभनिरूपणमिति। अत्र ताजिके वर्षफलप्रश्नादि जिज्ञासुरधिकारी ब्राह्मणः। अतएव हि जैरेतद्व्येत्यं
प्रयत्नं तद्विचारोक्तेः। प्रणम्यापहं बुद्धम। विविनकीतिपदेषु व्याकरणेन साधुत्वप्रतिपादनं ग्रंथप्रयोजनविषये पूर्वपक्षसिद्धांतप्रतिपादनं
योपजातिकाभेदप्रतिपादनं च वरुणशुद्धिगणशुद्धिप्रतिपादनं च चित्तवराणां कृतार्थो हृदी कायोरसलाभिधायो दुष्टव्यंततएवावधार्यमि
ति शिवम् ॥ १ ॥ अथेदानीं वक्ष्यमाणवर्षफलपयोगिनः चोत्तमयोगवक्तव्यास्ते पुनः फलदातृग्राह्याः फलदातृत्वं तु स्वगृहोऽभिप्रा
दिराशिष्वस्थित्या राशिस्वरूपज्ञानाधीनतया वक्ष्यादतो राशिस्वरूपं तावद्वक्तव्यं। उक्तं वक्ष्यामनेन। फलराशिग्राह्याधीनं सर्वेषां प्राप्तिर्नो यतः।
अतो मेघादिराशीनां स्वरूपं प्राङ्-निरूप्यते इति। अतोऽस्मिन् श्लोकराशिस्वरूपवर्णनं विकीर्णराशौ च राशिस्वरूपमुपजातिकयोपक्रम

राम
२

त। पुमानिति ॥ अत्र राशिग्रहनामानि लोकप्रसिद्धत्वात् प्रोक्तानि ॥ अतो मेघराशिर्ही दशरूपवयः। कीदृशः। पुमान् पुरुषः। वरश्चरसंज्ञकः। अ
ग्निरग्निर्तत्त्वं। सुदृढोऽतिवलिष्ठः। चतुष्पाश्चतुश्चरः। रक्तो लोहितवर्णः। उच्चः सोमशरीरः। पित्तमस्यास्तीति पित्तः पित्तप्रकृतिः। अतिर
क्तो महासाहः। रक्तश्चासा बुधश्चासौ पित्तश्चासावतिरवश्चेति कर्मधारयः। स्वमग्रेपिकर्मधारयो व्याख्येयः। अग्निः पर्वतवाग्धिनवारीवाध
ग्रः कूरः। पीतः पीतवर्णः। मेघे वर्णद्वयस्थित्युक्तिरवयवभेदाद्वा सर्वजिवर्णद्वयसंमिश्रीभावाद्वा फलवर्णवद्वा। दिनं दिनवली। प्राचीनं
राया पूर्वदिक् स्वामी। विषमोदयो विषमोदयसंज्ञः। अल्पसंगप्रज्ञः। अल्पः स्त्रीसंगोऽल्पप्रज्ञश्चाह। कांतिरहितः। नृपः क्षत्रियराजिः। समः
सममानः। एवंविधो मेघ इत्यर्थः। संज्ञाकरणप्रयोजनमग्रे वक्ष्यति। अत्रार्थे मूलवाक्यानि हृदी कायोरसलाभिधायो दुष्टव्यानि ॥ २ ॥ अथ वृष
राशिस्वरूपमुपजातिकया हृद्य इति। वृषराशिरीदृशो ज्ञेयः। स्त्री स्त्रीराशिः। इति भूमितत्त्वं। याम्येदृहिरादिकू स्वामी। सुभूः सुषुः सुमिवा
री। वायुर्वातप्रकृतिः। निशारत्रिवली। मध्यप्रज्ञासंगः मध्यमप्रज्ञो मध्यमस्त्रीसंगश्च। शुभः सोमः। वैष्णो वैष्णवातिः। अत्रानिपदानि प्राग्वद्वा
व्येयानि मेघराशिः सुदृढ इत्युक्तमयमर्थो दृढ इत्यर्थः ॥ ३ ॥ अथ मिथुनराशिस्वरूपमिदं वक्ष्यामि। मिथुनं हृदमिथु
मरोक्ते हृदं मिथुनराशिरीदृशो ज्ञेयः। प्रत्यक्षपश्चिमदिक् स्वामी। रामीरो वायुतत्त्वं। वातप्रकृतिर्मिथुनतुला कुंभराशीनां समधातुत्वोक्तेः।

घतः स्युषो मेघराशिमारभ्यत्रिस्त्रिंशद्विंशतिभिः पितृस्युषः ॥ यथाः मेघः पितृः ॥ ह्यो निलो वायुः ॥ मिथुने धातुसमः ॥ वातचित्तकफ
 मकः ॥ कर्कः ॥ रश्मिः ॥ सिंहः ॥ पितृः ॥ कन्या निलः ॥ तुला धातुसमः ॥ श्वेतः ॥ कफः ॥ पुनरप्येवं धनुः ॥ पितृः ॥ मकरो निलः ॥ कुंभो धातुसमः ॥ मीनकफ
 नी-टी इति ॥ अथ मेघराश्यादिदृष्टुं धरासुराश्च ज्ञेयाः ॥ विटवैश्यः ॥ धरासुरे ब्राह्मणः ॥ अथ यथा उक्ताः ॥ पितृपुनस्तृतीयपादस्य
 ४ र्थं पठितं प्रवृत्तं प्रकारेण कथितं स्पष्टं सारं पश्यन्नुसारं तोभूतं भवद्रविष्यं वृत्तं प्रमाणं प्रश्नोक्तं ग्रहसंवेधिराशिपुनर्वशातः सर्वफलं त्रयपुरभि
 या ॥ मंत्रं वा यस्यां तां यथा राहो मनुष्यप्रेषणप्रश्ने तदागमप्रश्ने वा यद्विमेधलं स्यात् तदा लयस्य ग्रहस्य तदधिपस्य वा द्वादिवलवर्त्तनं प्रष्टुं मनु
 ष्यस्य जातिवर्त्तनं वयोवस्थादिवाच्यं ॥ वलाभावे तु रात्रमनुष्योत्पत्तं सुदृढः पर्वतदेशवासी उल्लस्य भावो रूढः पीत रक्तवर्णः पितृप्रकृतिः पूर्वदिशि
 गमिष्यति तत्र आगमिष्यति वेति मेघराशिस्वरूपमाहो मप्रष्टुं वा ॥ एवं सर्वराशिष्वधिप्रश्ने तत्त्वभावदिग्देशवयोवर्णदिवक्तव्यमिति प्रयोक्त
 न संक्षेपः ॥ पितृवरणकृतायां तु हृद्दीकायां कुमालाभिधायां लिखितानां मूलशक्यानां प्रत्येकं प्रयोक्तव्यं मुक्तमस्ति तत्रैवावधार्यमिति ॥ १५ ॥
 अथेवं राशिस्वरूपमधिधायेदानीं वक्ष्यमाणं उक्तं योगफलकथनार्थं ग्रहस्वरूपमपि वक्तव्यं तेन ग्रहाः सिद्धांतज्ञानं विना दुर्घटं इति पर
 मकारुणिको ग्रंथस्तस्मात्कस्यच ग्रहसहितात्पंचांगपत्रादेवात्र शिष्या बुद्धिं ॥ १६ ॥ ग्रहानुयनमनुष्ठुभाहगतैष्येति ॥ प्रथमतः स्विष्टकालो

वे ५

रा म

४

विज्ञेयं सतस्तस्य सत्तावधिको ग्रहः किं काशिका इति त्रिंशद्विंशतिव्यास्ततश्च कालग्रहकावयोरंतरं दिवसाद्यं दिवसघटीपलात्मकं साध्यं तत्र म
 तमेव्यं वेति विचार्य ॥ यथा ॥ आसत्तावधिकालादिष्टकालः पूर्ववेत्तं रागतमिति वाच्यं ग्रहानुपस्थात्प्राप्त्या तदा तदैवमिति ॥ तादृशो नांतरेण स्पष्ट
 ग्रहस्य कलादिका गतिर्गुणाख्यद्विः षष्ठ्याभावात्तत्र मंशादिश्रंशकलाविकलात्मकं तत्तत्तत्तरे सति आसत्तावधिस्थे ग्रहे रादिस्यानेय
 थाक्रमंशोध्यो ॥ एषो त्वंतरं तद्वर्त्तमानं दृशेग्रहयोः प्रमेवमिष्टकालिकः स्पष्टो भवेत् ॥ एवं मार्गिताः सर्वे विग्रहाः साध्याः ॥ वाकिं प्रहाराणां राहुके
 लो अथैवंपरीतो वा रिसंस्कारः कार्यः गतेऽंतरे योऽयमेव्यं ॥ तरे शोध्यमित्यनुक्तमपि ध्येयं विलोममापित्वा त्रेधा म ॥ अथोदाहरणं ॥ संवत् १६५६ श
 के १५२१ समये आकाशमासे शुक्लपक्षे १३ भौमे ८ उपरि वतुर्दशमि तिथिः ॥ आशी नक्षत्रं १२ ३० उपरि पुनर्वसु नक्षत्रं द्वितीय आराणः ॥ आघात
 योगः ५ उपरि हर्षणयोगः ॥ अत्र दिने श्रीसूर्योदयादुत्तघटिकाः ५२ पलानि ३० समये हर्षणमेकमांशे मममाधवस्य जन्म समयः ॥ अस्मा
 कालात्तदाः समाः पादयुतो इति वक्ष्यमाणप्रकारेण वर्ष ३५ प्रवेशः कृतः ॥ संवत् १६६० शके १५५५ समये आषाढमासे शुक्लपक्षे वतुर्दशी ति
 थिर्बुध्ने ११ ५१ उपरि पूरणिमा पूर्वाषाढा नक्षत्रं २५ ५८ उपरि तुला षाढा नक्षत्रं १३ ५८ उपरि कुंभयोगः ३६ ५३ अ
 वदिने श्रीसूर्योदयादुत्तघटी ४० पल २१ समये कुंभसमेव वर्ष ३५ प्रवेशः भूतः ॥ कालिकः स्पष्टसूर्यो राश्यादिः ३१ ६ ३६ ५८ पूर्वाभायां गुरो ३३

नी० टी

६

करुचेति पूर्वस्मिन्प्रकारे वंदः स्पष्टो न कृतो तो राम विनो येषु वंदः स्पष्टो नाकारितस्मात्तस्मिन् लोस्वकरणात् त्वद्वकर्म संस्कृतं
 तश्चंद्रो मधु वेधेयस्ततः स्पष्टो पितृदुःकरीत्या वंदस्तद्वति श्रुत्याः सोद्योगे स्तु सर्वविग्रहा स्वकरणादेव कार्याः सस्म फलज्ञानार्थम्
 ॥१७॥ अथ तग्रहफलज्ञानार्थमावोपयिकतया लग्नदशमलग्ने सकृद्व्यति तत्र लग्नानयनार्थमिष्टकालस्य ज्ञातत्वा दशमलग्नसाधनीभू
 तेषु कालेन त्रकमुपज्ञात्वा हरवेन तमिति। श्लोकः स्पष्टार्थो विविच्यते। दिनखंडं मध्यह्ने दिनगतघटीहीनो दिने पूर्ववत्तं स्यादेवं रात्रिखं
 उं रात्रिगतघटीरहितं रात्रौ पूर्ववत्तं स्यात्। तथेष्टकालो मध्यह्नरहितश्चेदिने पश्चिमं न तं स्यादेव मिष्टकालो र्द्धरात्रघटीरहितः स न रात्रौ पश्चिमं
 न तं स्यात्॥ अथो राहरणार्थं वरपलाहिकमानीयते तत्र भास्करः। अयनलवदिनैः घात्रे घसंकोतिका लाद्रवति दिवसमध्ये या प्रभा ह प्रभासा॥ दश
 १० गतदृशो निघ्नी साहभां तात्रिभक्ता प्रतिग ह वरखंडा न्यायनांशा काभा नोः। भुजग ह मितियोगो भोग्यखंडांशधाता त्वगुणतवयुगखंडं खंड
 रं गोलयोः स्यादिति। तथा। वरपलायुतहीना माटिकाः पं वयं दधु हलमथ निशाद्वयाम्यगोलो विलोममिति। तथा। लंको दयानागतुरंगहस्तागोः
 काश्चिनो रामरदाविनाट्यः २७। २८। २९। ३० क्रमो क्रमस्थाश्चरखंडकैः खैः क्रमो क्रमस्थेऽश्वविहीनयुक्ताः। मेघादिष्वस्मा मुदयाः स्वदेशोक्त्या
 दितोमी वविलोमसंस्था इति। अथैवाकाराणामसंभंगुलाहिकाभा ४५ सा दशगत्रहशानिघ्नीत्यादिना मेघादिराशित्रयस्य वरखंडानि ५१। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००। १०१। १०२। १०३। १०४। १०५। १०६। १०७। १०८। १०९। ११०। १११। ११२। ११३। ११४। ११५। ११६। ११७। ११८। ११९। १२०। १२१। १२२। १२३। १२४। १२५। १२६। १२७। १२८। १२९। १३०। १३१। १३२। १३३। १३४। १३५। १३६। १३७। १३८। १३९। १४०। १४१। १४२। १४३। १४४। १४५। १४६। १४७। १४८। १४९। १५०। १५१। १५२। १५३। १५४। १५५। १५६। १५७। १५८। १५९। १६०। १६१। १६२। १६३। १६४। १६५। १६६। १६७। १६८। १६९। १७०। १७१। १७२। १७३। १७४। १७५। १७६। १७७। १७८। १७९। १८०। १८१। १८२। १८३। १८४। १८५। १८६। १८७। १८८। १८९। १९०। १९१। १९२। १९३। १९४। १९५। १९६। १९७। १९८। १९९। २००। २०१। २०२। २०३। २०४। २०५। २०६। २०७। २०८। २०९। २१०। २११। २१२। २१३। २१४। २१५। २१६। २१७। २१८। २१९। २२०। २२१। २२२। २२३। २२४। २२५। २२६। २२७। २२८। २२९। २३०। २३१। २३२। २३३। २३४। २३५। २३६। २३७। २३८। २३९। २४०। २४१। २४२। २४३। २४४। २४५। २४६। २४७। २४८। २४९। २५०। २५१। २५२। २५३। २५४। २५५। २५६। २५७। २५८। २५९। २६०। २६१। २६२। २६३। २६४। २६५। २६६। २६७। २६८। २६९। २७०। २७१। २७२। २७३। २७४। २७५। २७६। २७७। २७८। २७९। २८०। २८१। २८२। २८३। २८४। २८५। २८६। २८७। २८८। २८९। २९०। २९१। २९२। २९३। २९४। २९५। २९६। २९७। २९८। २९९। ३००। ३०१। ३०२। ३०३। ३०४। ३०५। ३०६। ३०७। ३०८। ३०९। ३१०। ३११। ३१२। ३१३। ३१४। ३१५। ३१६। ३१७। ३१८। ३१९। ३२०। ३२१। ३२२। ३२३। ३२४। ३२५। ३२६। ३२७। ३२८। ३२९। ३३०। ३३१। ३३२। ३३३। ३३४। ३३५। ३३६। ३३७। ३३८। ३३९। ३४०। ३४१। ३४२। ३४३। ३४४। ३४५। ३४६। ३४७। ३४८। ३४९। ३५०। ३५१। ३५२। ३५३। ३५४। ३५५। ३५६। ३५७। ३५८। ३५९। ३६०। ३६१। ३६२। ३६३। ३६४। ३६५। ३६६। ३६७। ३६८। ३६९। ३७०। ३७१। ३७२। ३७३। ३७४। ३७५। ३७६। ३७७। ३७८। ३७९। ३८०। ३८१। ३८२। ३८३। ३८४। ३८५। ३८६। ३८७। ३८८। ३८९। ३९०। ३९१। ३९२। ३९३। ३९४। ३९५। ३९६। ३९७। ३९८। ३९९। ४००। ४०१। ४०२। ४०३। ४०४। ४०५। ४०६। ४०७। ४०८। ४०९। ४१०। ४११। ४१२। ४१३। ४१४। ४१५। ४१६। ४१७। ४१८। ४१९। ४२०। ४२१। ४२२। ४२३। ४२४। ४२५। ४२६। ४२७। ४२८। ४२९। ४३०। ४३१। ४३२। ४३३। ४३४। ४३५। ४३६। ४३७। ४३८। ४३९। ४४०। ४४१। ४४२। ४४३। ४४४। ४४५। ४४६। ४४७। ४४८। ४४९। ४५०। ४५१। ४५२। ४५३। ४५४। ४५५। ४५६। ४५७। ४५८। ४५९। ४६०। ४६१। ४६२। ४६३। ४६४। ४६५। ४६६। ४६७। ४६८। ४६९। ४७०। ४७१। ४७२। ४७३। ४७४। ४७५। ४७६। ४७७। ४७८। ४७९। ४८०। ४८१। ४८२। ४८३। ४८४। ४८५। ४८६। ४८७। ४८८। ४८९। ४९०। ४९१। ४९२। ४९३। ४९४। ४९५। ४९६। ४९७। ४९८। ४९९। ५००। ५०१। ५०२। ५०३। ५०४। ५०५। ५०६। ५०७। ५०८। ५०९। ५१०। ५११। ५१२। ५१३। ५१४। ५१५। ५१६। ५१७। ५१८। ५१९। ५२०। ५२१। ५२२। ५२३। ५२४। ५२५। ५२६। ५२७। ५२८। ५२९। ५३०। ५३१। ५३२। ५३३। ५३४। ५३५। ५३६। ५३७। ५३८। ५३९। ५४०। ५४१। ५४२। ५४३। ५४४। ५४५। ५४६। ५४७। ५४८। ५४९। ५५०। ५५१। ५५२। ५५३। ५५४। ५५५। ५५६। ५५७। ५५८। ५५९। ५६०। ५६१। ५६२। ५६३। ५६४। ५६५। ५६६। ५६७। ५६८। ५६९। ५७०। ५७१। ५७२। ५७३। ५७४। ५७५। ५७६। ५७७। ५७८। ५७९। ५८०। ५८१। ५८२। ५८३। ५८४। ५८५। ५८६। ५८७। ५८८। ५८९। ५९०। ५९१। ५९२। ५९३। ५९४। ५९५। ५९६। ५९७। ५९८। ५९९। ६००। ६०१। ६०२। ६०३। ६०४। ६०५। ६०६। ६०७। ६०८। ६०९। ६१०। ६११। ६१२। ६१३। ६१४। ६१५। ६१६। ६१७। ६१८। ६१९। ६२०। ६२१। ६२२। ६२३। ६२४। ६२५। ६२६। ६२७। ६२८। ६२९। ६३०। ६३१। ६३२। ६३३। ६३४। ६३५। ६३६। ६३७। ६३८। ६३९। ६४०। ६४१। ६४२। ६४३। ६४४। ६४५। ६४६। ६४७। ६४८। ६४९। ६५०। ६५१। ६५२। ६५३। ६५४। ६५५। ६५६। ६५७। ६५८। ६५९। ६६०। ६६१। ६६२। ६६३। ६६४। ६६५। ६६६। ६६७। ६६८। ६६९। ६७०। ६७१। ६७२। ६७३। ६७४। ६७५। ६७६। ६७७। ६७८। ६७९। ६८०। ६८१। ६८२। ६८३। ६८४। ६८५। ६८६। ६८७। ६८८। ६८९। ६९०। ६९१। ६९२। ६९३। ६९४। ६९५। ६९६। ६९७। ६९८। ६९९। ७००। ७०१। ७०२। ७०३। ७०४। ७०५। ७०६। ७०७। ७०८। ७०९। ७१०। ७११। ७१२। ७१३। ७१४। ७१५। ७१६। ७१७। ७१८। ७१९। ७२०। ७२१। ७२२। ७२३। ७२४। ७२५। ७२६। ७२७। ७२८। ७२९। ७३०। ७३१। ७३२। ७३३। ७३४। ७३५। ७३६। ७३७। ७३८। ७३९। ७४०। ७४१। ७४२। ७४३। ७४४। ७४५। ७४६। ७४७। ७४८। ७४९। ७५०। ७५१। ७५२। ७५३। ७५४। ७५५। ७५६। ७५७। ७५८। ७५९। ७६०। ७६१। ७६२। ७६३। ७६४। ७६५। ७६६। ७६७। ७६८। ७६९। ७७०। ७७१। ७७२। ७७३। ७७४। ७७५। ७७६। ७७७। ७७८। ७७९। ७८०। ७८१। ७८२। ७८३। ७८४। ७८५। ७८६। ७८७। ७८८। ७८९। ७९०। ७९१। ७९२। ७९३। ७९४। ७९५। ७९६। ७९७। ७९८। ७९९। ८००। ८०१। ८०२। ८०३। ८०४। ८०५। ८०६। ८०७। ८०८। ८०९। ८१०। ८११। ८१२। ८१३। ८१४। ८१५। ८१६। ८१७। ८१८। ८१९। ८२०। ८२१। ८२२। ८२३। ८२४। ८२५। ८२६। ८२७। ८२८। ८२९। ८३०। ८३१। ८३२। ८३३। ८३४। ८३५। ८३६। ८३७। ८३८। ८३९। ८४०। ८४१। ८४२। ८४३। ८४४। ८४५। ८४६। ८४७। ८४८। ८४९। ८५०। ८५१। ८५२। ८५३। ८५४। ८५५। ८५६। ८५७। ८५८। ८५९। ८६०। ८६१। ८६२। ८६३। ८६४। ८६५। ८६६। ८६७। ८६८। ८६९। ८७०। ८७१। ८७२। ८७३। ८७४। ८७५। ८७६। ८७७। ८७८। ८७९। ८८०। ८८१। ८८२। ८८३। ८८४। ८८५। ८८६। ८८७। ८८८। ८८९। ८९०। ८९१। ८९२। ८९३। ८९४। ८९५। ८९६। ८९७। ८९८। ८९९। ९००। ९०१। ९०२। ९०३। ९०४। ९०५। ९०६। ९०७। ९०८। ९०९। ९१०। ९११। ९१२। ९१३। ९१४। ९१५। ९१६। ९१७। ९१८। ९१९। ९२०। ९२१। ९२२। ९२३। ९२४। ९२५। ९२६। ९२७। ९२८। ९२९। ९३०। ९३१। ९३२। ९३३। ९३४। ९३५। ९३६। ९३७। ९३८। ९३९। ९४०। ९४१। ९४२। ९४३। ९४४। ९४५। ९४६। ९४७। ९४८। ९४९। ९५०। ९५१। ९५२। ९५३। ९५४। ९५५। ९५६। ९५७। ९५८। ९५९। ९६०। ९६१। ९६२। ९६३। ९६४। ९६५। ९६६। ९६७। ९६८। ९६९। ९७०। ९७१। ९७२। ९७३। ९७४। ९७५। ९७६। ९७७। ९७८। ९७९। ९८०। ९८१। ९८२। ९८३। ९८४। ९८५। ९८६। ९८७। ९८८। ९८९। ९९०। ९९१। ९९२। ९९३। ९९४। ९९५। ९९६। ९९७। ९९८। ९९९। १०००।

राम
६

थ१

४२१

अथायनांशश्रुसोराः पितामहवरलोर्मकरं दभावविहता बुक्ताः भूनेत्रवेदो नशकावशेषो दशांशहीनः खरसंखिंदशाः। स्युरायना इति। तत्र
 शकः १५५५ भूनेत्रवेदे ४२१ रूनः शेषः ११३४ अस्पृष्टांशः ११३४ २४ अयमेव हीनः १०२० ३६ छिन्नकोजाती अयनांशः ११०१ ३६ अथाय
 नांशयुक्तः स्पष्टः सूर्यः ३२६ ३१ २४ अस्पृष्टभुजः २३ ३१ २४ ३६ भुजगहृदयस्पृष्टलो वरखंडं यं भुक्तं ५१ ४६ भोग्यखंडेन १८ अंशादि ३२
 ३६ गुणितं ६४ त्रिंशद्भक्तं लखंडं ६४ यैको १०३ योजितं त्रातं वरं पलात्मकं १०५ घटिकादि १। ४५ इदमुत्तरगोलसत्वापे वदशमध्ये युक्तं जाते दि
 ना ६ १६ ४५ हीने कृतं त्रातं रात्रिखंडं १३। १५ इष्टकाले रात्रिगतघटिकाः ६। ५१ आभिरूतं रात्रिखंडं त्रातं प्रादुर्भवे घटिकादि १२ ४६ अथल
 को दयाः स्वदेशीयवरखंडैः प्रायुक्तहीनहीनयुक्ताः कृताः संतो जाता वाराणस्य मेघादीनां घस्मा मुदयाः २२ ५२ ५३ ३० ४३ ४२ ३४ ५३ ३५ सते
 एव वेपरीत्या तुलाहीना ज्ञेयाः उक्तं वपितामहवरणैः। कुदस्त्रदस्त्रा गुणवाणदस्त्रा वेदभ्रामायमवेदरा माः। शरास्त्रि रा माः शरामसमा मे
 घा क्रमाद्व्यत्यतस्तुला देरिति ॥८॥ अथाहविष्टकालाद्युगपद्व्यत्यतस्तुला नयनं साक्षी नुष्टुपूर्वदोष्यामाह तत्कातरति। शशार्थस्त्वयं।
 तात्काहिके तसायनांशे स्पष्टसूर्येण ये भुक्ता भोग्या वा अंशा स्तेः संगुणिता स्यायनां शसूर्योक्तं राशुदया तसाग्निभिस्त्रिंशता भक्तं य
 द्दक्षं पलादित इवे भुक्तं भोग्ये वा क्रमेण व्यतेत तदष्टकालघटीभ्यः पलीकृता भ्यस्तत्पत्रे शोभयेत्ततो वशिष्टपलेभ्यः अणभनलग्नक्रमे

नी. टी.

रास्त्रीयोदय गतगम्या न्ययपुनस्मरेत यदपुनरग्निसोद्यो न शुद्धाति तदा तच्छेवं खविमिस्त्रिंशताह तं गुणितं पुद्गादग्निमेणाशुद्धोदयेन भ
 कंयद्वेनमशादिकं तक्रमेण शुद्धशुद्धराशौ हीनं युतं कृतं ततो ज्येष्ठो राक मयनां शरहितं तनुर्लभं स्यात् । अथ मन्त्राः सूर्यार्थः । अतः लगे
 तीवत्सूर्योदयात्क्रियतीषुराविशेषघटीचिष्टकालोस्ति तदा तमेवावशिष्टं कालमिष्टकालं प्रकल्प्य तात्कालिकः सूर्यो विधेयः पुनः सायनं
 राः कार्यं स्तेनां त राशौ भुक्तं शादिना तदा क्रांत राशुदयो गुणपस्त्रिंशता भास्यो यद्वेनमशादि तत्सूर्यस्य भुक्तं स्यात् तदिष्टकालपलेभ्यः शोध
 येततः सूर्यभुक्त राशिनि जोदयो ११ शोधयेद्यदास्त्रीयोदयः शोधमानो न शुद्धाति तदा वशिष्टं विंशतासंगुणं तत्सूर्यभुक्ते नाशुद्धोदयेन भास्यं य
 द्देनमशादि तदशुद्धोदयराशौ शोधयेततोऽयनां शरहितं सद्राण्यादिकं मन्त्रा लगे स्यात् । इदं लगे सूर्योदयादा विप्रारंभा द्वेष्ट घटीभिर्द्वं न लये किं
 यमाणं तुल्यमेव भवति । तथा धनलगे सूर्योदयादूर्ध्वं यावनिष्टकालो भूतमिष्टकालं प्रकल्प्य सायनां शस्य च सूर्यस्य तात्कालिकस्य क्रांत
 राशौ भुक्तं शास्त्रिंशतो विशेषावशिष्टा भोग्यो राशौः सूर्यो क्रांत राशो नि जोदयो गुणपस्त्रिंशता भक्तो लब्धं पलादिकं तत्सूर्यस्य भोग्यमिष्टका
 लपलेभ्यः शोधयेद्यदा शोधमानो उदयो न शुद्धाति तदा वशिष्टं विंशता गुणमशुद्धोदयेन भक्तं लब्धं मंशादि तच्छुद्धोदयराशौ यथास्थानं योऽयं
 ततो यनां शरहितं सद्राण्यादिकं धनलगे स्यात् ॥ ५२० ॥ अथोदाहरणं ॥ तात्कालिकः सायनार्कः शरदा ३१ ३४ मन्त्रा लगे साधनार्थं रात्रिशेषं

राम ७

६१

घटिका इष्टकालौगी कृतः २५ ३५ तदर्थं भुक्तं राशौ २६ ३१ ३४ कर्कोदयो ३४२ गुणितो जातः २१०६ ७ १४८ विंशता भक्तो लब्धं भुक्तं पला
 दिकं ३० ३१ ३२ १५ इष्टकालघटीभ्यः पली कृताभ्यः ११७८ शोधितं सच्छेवं ८७ ५ १७ ४५ अस्मात्पूर्वभुक्तानि युनष्ट मेषारव्यानि जोदयान्
 ३० ४२ ५ ३२ २१ नीनपास्यावशिष्टं २१ २१ ४५ खग्राह तं २२ २३ ५ ३० मीनोदये नाशुद्धे न २२ १ भक्तं लब्धं मंशादि २३ १ ३ ४८ इष्टकाल
 लग्नत्वादशुद्धे मीने राश्यादौ २२ १० १० १० हीनं जातं सायनं तमे राश्यादि ११ १६ ४६ १२ अयनां राशौ १७ १० १३६ हीनं जातं तात्कालिकमन्त्रा
 लग्नमू १० २५ ४५ ३६ अथ धनलगे नानयनं । तत्र तात्कालिकोर्कः सायनां शः स एव ३१ ६ ३१ ३४ अत्र रात्रीष्टकाले लग्नस्य ११ यमाण
 लोदात्रौ लग्नं भास्यं क्राद्वेस्त्विति वक्ष्यमाणत्वात् मद्राशियुक्तः कृतः सूर्यः २१ २६ ३१ ३४ अस्मभागास्त्रिंशतः शोधिताः सेतो १० राशः
 स्युः ३१ २१ ३६ तर्क राशो नि जोदयो ३० ४ गुणितः १० २५ ३६ ४४ आदौ रात्रिभक्तो लब्धं पलादिकं ३४ १ ३ १९ एतदिष्टनाडी
 पलेभ्यः ४ शोधितं सद्रावशिष्टं ३७ ६ ४८ अस्माद्गोपकुंभानि जोदयं २५ ३ विशेषावशिष्टं २२ ३ ४८ खग्राह तं ३१ ४ २० अशु
 मीनोद २१ भक्तं लब्धं मंशादि २६ ४ २ ५ कुंभस्य शुद्ध लरेकादशराशिषु ११ १० १० अंशस्याने योजितं जातं सायनं तमे ११ १६ ४६
 २५ आ तैहीनं जातं तदेव राश्यादिकं कुंभलग्नं धनं सें १० १२ ४ १ ४८ उभयोर्लगे योरंतरं कलादि २१ २३ यतितं तद्विपलावयवत्वा

नी. ६१

५०।२॥ अथ मर्हमतेतुयदापध्याद्वाहृरात्रोत्तरमिष्टकालसत्वेत्यादिपुत्रिभनतत्वाहृनसंज्ञकदशमलग्नोदाहरणमूह्यं। ननु पूर्वधनतग्नानयनेरा
त्रौल्यं भाहृदुक्ताइवेति विवचनाद्यथा घट्टराशियोगो विहित एवमण लग्नेपिरात्रितग्नत्वात्सुकुतो न विहितः। उच्यते। रात्रावित्यनेन रात्रिप्रवेणो
तरमिष्टकालो न विहित एव घट्टराशियोगः कार्यः। अक्रतुसूर्योदयात्प्रागेव रात्राविष्टकालस्य विवहितत्वात्क्रतुः। एवं मध्याह्ने उत्तरमपिरात्राविष्ट
कालस्य सत्वाहृनदशमलग्नानेयनेपि घट्टराशियोगो न क्रतुः। एवं स्वकुट्टाबुद्धिमद्विरन्यदपूह्यं। यथा। यदा मध्याह्ने वाहृरात्रे वा वर्धुवशास
त्वेन ताभावात्कथं दशमभावनिष्पत्तिरिति। उच्यते मध्याह्ने तु सूर्य एव दशमभावः। अहृरात्रे तु सूर्यश्चतुर्थभावः। उक्तं च युक्तिसिद्धं सूर्यदेवतेः
। मध्याह्ने वाहृरात्रे वा न तत्कालो मविद्यते। तदा तत्कालसंभूतो रविरेव मध्यकमिति। एवमध्यं दशमभावः। कं सुखभावः। प्रातरिष्टकालाभावे तु
सूर्य एव लग्नं। सायमिष्टकालाभावे संघट्टः सूर्यो लग्नमित्युहो विधेयः। अत्र पूर्वधनलग्नानयने तथा सणधनदशमलग्नानतं विनापि दशमलग्नान
नयने बोधयति हृदी कायोरसात्तायो दुष्टया॥ २०॥ २१॥ अथैवं लग्नदशमभावो विधाय मभावानयनमनुष्ठुपूहं हो भ्यामाह संघट्टे इति। लग्नत्वे
लग्नदशमलग्नाने घट्टराशियुक्ते स प्रभवतुर्थभावोक्तः। लग्नं सत्त्वं स प्रयोभावो दशमघट्टयुक्तं चतुर्थभावो भवति। एवं वत्तारो भावो भवति। अथ लग्नो
ननु र्यतो लग्नही नयेतुर्थभावो वत्तारोः घट्टिभागे द्वियमाणो हृत्वाद्यो राश्यादिरंशो न युक्तं नुलं प्रथमद्वितीयभावयोः संधिः स्यादेव मनेपि

राम
८

घट्टांशो जनात्संखयस्त्रयोभावाः स्युः। यथा। स संधिस्तेन घट्टांशो न युक्तो द्वितीयभावो भवति। स पुनः घट्टांशयुक्तः। द्वितीयत्वात्तीयभावसंधिः। स पु
न घट्टांशयुक्तः। तृतीयभावः। स पुनः घट्टांशयुक्तः। तृतीयवतुर्थभावयोः संधिः स्यादित्यर्थः। अथ स एव घट्टांशो रूपमध्येशो धिता वशिष्ठो राश्यादि
स्तेन युक्तात्सुवादग्रेत्रयः स संखयोभावाः स्युः। यथा। प्रागानीतघट्टांशो नैकावशेषेण राश्यादिना युक्तश्चतुर्थभावश्चतुर्थपंचमभावयोः स
ंधिः स्यात्। पुनः स संधिस्तेनैव युक्तः स पंचमभावो भवति। पुनरयं तेन युक्तः पंचमघट्टभावयोः संधिः स्यात्। पुनरयं तेन युक्तः घट्टभावः स्यात्। पुनः
स तेन युक्तः घट्टसप्तमभावयोः संधिः स्यादित्यर्थः। एवं ते वत्तारोः स संखयः स्युः। एते पुनः स संखयोभावाः भाहृनघट्टराशिमिष्टकालाः
संतः परे सप्तमं त्रयसंखयः घट्टभावाः स्युः। यथा। द्वितीयभावः घट्टराशियुक्तः। घट्टमभावो भवति। प्रथमद्वितीयभावसंधिः घट्टराशियुक्तः
भावः। ४। २८। ४। ५। ३६। दशमं ७। ३। ५। २। स घट्टवतुर्थभावः २। १। ५। २। ३६। अथ घट्टांशः ०। १। ५। ४। १। ५। ४
भावः ४। २८। ४। ५। ३६। दशमं ७। ३। ५। २। स घट्टवतुर्थभावः २। १। ५। २। ३६। अथ घट्टांशः ०। १। ५। ४। १। ५। ४
लग्नयो जिते पुनः द्वितीययोः संधिः १। १। ५। २। ३६। पुनः सोत्रयुक्तो द्वितीयभावः ०। १। ५। २। ३६। एवमनेपि कर्तव्यं। घट्टांशो न एकः ०। १। ५।
१। ५। २। ३६। नैव युक्तश्चतुर्थभावश्चतुर्थपंचमभावसंधिः २। १। ५। २। ३६। पुनरनेनायं युक्तः पंचमभावः २। १। ५। २। ३६। एवमनेपि द्विष्टमं। ए

वंशभावाः संधयोः भूवन्तस्तस्तेषु राशियुक्ताः संधयोः दशभावाः ॥ १२३४५॥
 एवं संधिसंख्यं लभावनिः पत्रैः प्रयोजनमनुबुद्धिनाह ॥ खेटइति ॥ यद्वावस्थो ग्रहस्तद्वाव
 राशेशकलाविव लाभिर्गदहस्तः स्यात्तदा तद्वावजं भुमभुमं वा परं विंशतिविश्रात्मकं
 फलं भवति ॥ अथ संधिराशेशकलाविकलाभिस्तु यश्चेद्ग्रहः स्यात्तदा प्रागपरभावस्थ
 भुमभुमं वा फलं खेपूयमेव स्यात्संधिस्थो ग्रहो निःफल इत्यर्थः ॥ १२४॥ अथ पूर्व
 लग्नदशमसाधने सूर्योद्भूतं भोगं वा द्वादि कमानां तमिष्ट घटी भूयः कृतं तदा
 लग्नसिद्धिरात्रिंशते विंशतिं वा लिनी कुंदसाह भुक्तमिति ॥ यद्वा कलाः स्युः
 सूर्योद्भवाः प्राक्पश्चाद्भवैर्दशसंयनाः स्युः सूर्योद्भवाः भुक्तं भोगं वा
 पलाहितं तस्मादिष्टकाला न्नुद्भूतिबहुत्वात्तदाऽप्यप्यस्तौष्टका लात्रिंशतानि प्राजाणता सायनां राश्यष्टसूर्यां क्रोतराशो
 हृदयेन स्वीयो हृदयेन लंको हृदयेन वा भक्तं यदाहं लंको हृदयेन सति तादृशो भास्करे हीनं कार्यं भिन्नतये सति तस्मिन् युक्तं कार्यं ततः पु

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १० | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| २० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| ३० | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| ४० | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
| ५० | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| ६० | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| ७० | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| ८० | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
| ९० | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| १०० | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
| ११० | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| १२० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| १३० | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| १४० | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| १५० | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
| १६० | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ |
| १७० | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
| १८० | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ |
| १९० | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| २०० | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
| २१० | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |

राम
 १०

नरयनां शहीनं कार्यं तदृणलग्नं धनं तन्नेवा स्यात् ॥ अथ रात्रिंशते तु विशेष उच्यते रात्रिंशते क्रियमाणे सूर्योत्थायनां शास्त्राध्वगं कार्यं
 मिति ॥ इयमुक्तिस्तु सौकर्यार्थं सूर्योद्भवाः शीघ्रकालपर्यंतं वह्नयशोधने गौरवं स्यात्सर्वदूतुसूर्यात्सायमारभ्य रात्रीष्टकालेऽहोदयशोधने
 पुकरताभवत्येव परं न तु तेनानेन वा प्रकारेण लग्नं नयने एव मंतरं पतति ॥ इदं हरणं कल्प्यते ॥ सूर्योद्भवाः प्रागिष्टकालः कल्पितोऽष्टिकाद्वये रता
 कातिकः सूर्यः ३१८ ॥ ५३ ॥ ४५ सायनां शाः ३१२ ॥ ५४ ॥ २१ अणलग्नत्वाद्भुक्तो दोः २६ ॥ ५४ ॥ २१ कर्कोद्भयोऽष्टगुणितः ६२० ॥ १४८ त्रिंशद्भुक्तं जातं
 भुक्तं ३० ॥ ४३ ॥ इमिष्टकालात् २५ लीकतात् १२० न भुक्षतीत्यमिष्टकालः १२० त्रिंशान्निष्टः ३६०० कर्कोद्भयेन ३४२ भक्तो लक्षमं शादि १०
 ३१ ॥ ३५ सूर्योद्भवेन ३१८ ॥ २२ ॥ ४६ अयनां शहीनं जातं ताकातिकमणलग्नं २१२ ॥ २२ ॥ १० अथ धनलग्नोदाहरणं ॥ द्वितीयसूर्योद्भवादनंतर
 मिष्टकालपतानि २० अथ संधिराशेशकाले हृदयेन २१२० वा तितः प्राक्सूर्यस्ताकातिको जातः ३१८ ॥ ५४ ॥ ५८ सायनां शाः ३१२ ॥ ५४ ॥ ३४ अस्य भो
 ग्यां शाः ३३ ॥ २६ तर्कोद्भयो गुणितः १०४ ॥ ५३ ॥ ३४ त्रिंशद्भुक्तो लक्षं भोगं ३४ ॥ ५३ ॥ ३४ इमिष्टकालात् २५ लीकतात् १२० न भुक्षतीत्यमिष्टकालः २० त्रिंशद्भुक्तः ६०० क
 र्कोद्भयेन भक्तो लक्षमं शादि १४ ॥ ५३ ॥ १५ सूर्योद्भवेन ३१२ ॥ ५४ ॥ १४ अयनां शहीनं जातं ताकातिकं धनलग्नं ३१२ ॥ ५४ ॥ १३ एवं दशमलग्नं नयने
 सराधनं न भुक्तं भोग्यात्कालं त्वेसमूह्ये ॥ रात्रौ लग्नं भास्करोद्भवेऽस्ति सूर्योद्भवाः प्रागेवोक्तमिति ॥ पुनर्न प्रदर्शयते २५ ॥ अथ भावपरतः
 वारमनुबुद्धिना ह खेटे संधिद्वयोतः स्युः इति भावसमेग्रहेण संख्यं संखिसमेतुग्रहेण स्युः संधिस्थो ग्रहो निःफल इत्यर्थः ॥ १२४॥ अथ पूर्व

नी.टी
१२

| | | | | | | | | | | | |
|----------|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|
| राशयः | मं | ६ | क | सि | क | तु | ६ | ५ | म | क | मी |
| प्र.इ.ई | मं | ७ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| द्वि.इ.ई | सु | ८ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| तृ.इ.ई | शु | ९ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |

राशिभिरंशैः परमोऽंशः स्यात्। ज्ञात्वाभिप्रायेणैकवचनं। उच्चराशयः
 सुः। सुयः। उच्चराशयः परमोऽंशः। एवं वंशदीनामपि दृष्टादिषु गुणदंशैः प
 रमोऽंशोऽयं। अथोच्चकृतानयनं नवांशस्वामिनश्चोपजातिकयाह तत्स प्रममि
 तेषां मेघादीनां सप्रममं हंशशिनी वंस्यात्सूर्यादीनां। तावता वंसांशैः परमो
 वंस्यात्। यथास्तुलानी वंशभरंशैः परमोऽंशः। एवं वंशदीनां नी वंतावद्विस्तारवद्विस्तृतं। अथयस्य ग्रहस्योच्चकृतं दिकी वितं स
 ग्रहस्तत्र नीयेनोनः कार्योऽवशेषमेव अधिकस्तदावका द्वादशराशिभ्यः शोधोर्विदिष्टस्योराः कार्यः। राशयस्त्रिंशानुलिताः शिषे
 रंशैः सहितास्तत्र तेन वामिर्भाष्यालक्षकं लादिकमुच्चकृतं स्यात्। यथा सूर्यः ३६५ १५ ८ सूर्यस्य परमनी च राश्यादि १० १० १० अनेन हीनः
 सूर्यः कृतः ८ २८ ३ २ ६ ५ ८ उराशितो विकलांशकादिषु द्वेयं ३ १० २ २ २ अस्यांशः २० २ २ २ नव
 मिर्भाष्यालक्षकं लादिकं सूर्यस्योच्चकृतं १० २ एवं वंशदीनामपि तत्। अथनवांशादुच्यंते क्रियेति। कि
 योमेघः। एतौ मकरः। तौ लिस्त्रादं दुभंकर्कस्तदादितो नवांशागणनीयाः। यथा मेघमेघादेवनवां

| | | | | | | | | | | | |
|--------|----|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|
| ग्राहः | सु | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | १ | २ | ३ |
| उच्च | १० | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | १ | २ | ३ |
| विल | २ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |

१+ एवेमक एदेवा विष्णुनेतु हात एव। कर्क कर्क देवेति। एवं संहदिष्ट विधनुरादिष्ट विनवांशगणना x १

१३

राशयः नवांशस्वामिनोराशिस्वामिनिस्त्वभवंति। नवांशप्रमं हं स मंशास्त्रयोराः ३२ ० १ ३ ० ॥ अथ द्वादशराशिषु हं देशान्तरि
 पजातिकाभिराह। मेघरत्नादि। हं देशोयवनभाषयाऽवधिवाचकः। अवधिश्च मर्यादा न द्वादशराशिषु भौमादिपंचमं हं देशामेवांश
 नियतत्वेन स्वामित्वं हं देशादृवाययावनेत्येतिः शास्त्रेन त्रैवशक्तेः। यथा। मेघे प्रथमं उंशानां जीवो गुरुः। ततः पञ्चंशानां मास्युजिष्यु
 क्रः। ततोष्टांशानां होबुधः। ततः पंचांशानां मासोभोमः। ततः पंचांशानां शनैश्चरः स्वामीत्यर्थः। एवं दृष्टादिष्ट विमीनांतेषु नियतांशवशेन भो
 मादीनां पंचांशस्वामित्वं तेभ्यः। अत्रातिस्पष्टतायै हं देशाचकं। ३६५ ॥ अथग्रहवलांशाना

| | | | | | | | | | | | |
|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| मेघ | ६ | मि | का | सि | क | तु | ६ | ५ | म | क | मी |
| ६६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ |
| ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ |
| ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ |
| ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ |
| ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ |
| ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ |
| ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ |
| ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ |
| ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ | ७८ | ७६ |

यं स्थानान्यभिधायकस्मिंस्थाने कियं हं लमिति वदन्त्येव वगीवलनिष्पत्तिमुपजा
 त्याह त्रिंशदिति। स्पष्टार्थपदं मुसहं नवांशोयावनः शोयो। वलस्य वेदुतवे श्रुत
 यं शोर्विशोपकाशेय ॥ ३७ ॥ अथग्रहोयदिस्वीयेषु पंचस्वधिकारेषु न भवति तत्त
 वल एव किं स्यादित्यस्योत्तरमिंदवत्रां हं साहस्यस्वधिकारेकवतमिति। अत्र दृष्टः
 स्थानवर्षचमेवलवतीत्यादिना त्रिविधाईष्टिर्विद्यते तत्संवेधेन च पंचपान्मिर्त्रदृष्टा
 सुहं द्रुपुदृष्टाशुः समस्तमथेति मेत्री चक्रमपि वक्ष्यतेऽतः प्रथममत्र मेत्री चक

रुतालेख्यं। ततो ग्रहः स्त्रीयेषु पंचस्वधिकारेषु नास्ति किंतु हिमि। स्वसमस्य वाशत्रोर्वा गृहहृद्देष्माणनवांशनामन्यतरस्यानेषु तिष्ठ
 तितहा सुहृद्देष्माणनवांशो विधिः। एवमग्रेषु विधादोने वतुर्थोशो न वतं ग्राह्यं। समस्य गृहे चेतदाई वतं देयं
 नी. ४। शत्रुगृहे चेतदाई वतं देयं। यथा। स्वगृहे वर्तमानस्य गृहस्य त्रिंशत्स्वर्वाः वतं स्यान्मित्रगृहे पादोने साहृद्देष्मातिः २२
 १३० समभेदं पंचराश्यां पशुभे वतुर्थोशः साहृद्देष्मातिः सप्तग्राह्यं ॥ ३० ॥ शुभं वतुर्थोशो गणितो गतत्वात् न स्यात्तथा स्वहृद्देष्मातिः पंचराश्यां पशुभे
 हृद्देष्मातिः पादोनाः सपादा सकारं ११५ समहृद्देष्मातिः साहृद्देष्मातिः सप्तग्राह्यं ॥ ३० ॥ शत्रुगृहे पादोनां शत्रुत्वारः ३०५ एवं सर्वदेष्माणनवांश
 १० मित्रदेष्माणनवांशः सप्तग्राह्यं ॥ ३० ॥ समदेष्माणनवांशः पंचराश्यां पशुभे वतुर्थोशः साहृद्देष्मातिः ॥ ३० ॥ एवं स्वनवांशोपमित्रनवांशोपादोनां शत्रुत्वारः ३०५ समन
 वांशो साहृद्देष्मातिः ॥ ३० ॥ शत्रुनवांशो सपादमेकं ११५ वतं स्यादित्यर्थः। एवं सर्वग्राह्यां पंचराश्यां वतं मानीयतदेकैकतेततो वेदैश्चतुर्भि
 रुद्धते भक्तैः सति त्वं विंशोपकाः स्युः। तत्रयस्य गृहस्य पंचराश्याधिकं वतं संपूर्णवीर्यं ज्ञेयः। यस्य राश्याधिकं वतं समभ्युवीर्यः। यस्य पंचराशि
 कं वतं सानि कृष्टवतः। यस्य राशो न पंचराश्यां नूनं वतं सही तव लोनिर्वह इत्यर्थः। अयं विषयविभागो वर्षे शान्तिर्लभ्यते दशापतिफलनिर्णयः राम
 यार्थोपपद्यते। अथोदाहरणं। तत्र वस्य मागरीत्याहृद्विशामे वीर्यं। तत्र सूर्यः स्वगृहे सिंहनास्ति किंतु वंद्यस्य समस्य गृहे स्त्रीत्यहं ग
 हे वतं १५। ७ शुभं वतं तु गणितो गतमेवास्ति १०। २ तथा सपुत्रस्य समस्य गृहे पादोनां साहृद्देष्मातिः ३० पुनः सपुत्रस्य समस्य देष्माणनवांशो स्त्रीत्य

कहं देष्माणनवांशो १० पुनः सकर्के कयानवांशो स्वामिनो बुधस्य राशो गृहे स्त्रीति पादोने नवांशो वतं ११५ लेख्यं एवं चंद्रादीनामपि साधितं पंचराश्यां
 वतं। सर्ववर्के स्पष्टं ॥ ३० ॥ अथेवं पंचराश्यां वतं मभिधाय द्वादशव
 गी वक्तुकामस्तत्स्वरूपं तत्र योजनं दशालि न्याह। लेख्यमिति। स्व
 यार्थोपपद्यते ॥ ३० ॥ अथ राशिस्वामिनो प्रागुक्तत्वाद् द्वादशराश्यां देष्माण
 वतुर्थोशो मानी शान्तिर्लभ्यते अत्राह आते इति। एवमिदं तावत्स्पष्टार्थ
 होरा राश्यां पंचराश्यां राश्यां मकं। अथ देष्माणनवांशः। तत्रयस्य
 राश्याः प्रथमश्चेत्तदा स्वस्वराशिस्वामिन एव। द्वितीयश्चेत्तर्हि स्वराशिः स्व
 श्चेत्तर्हि स्वराशेर्नवमराशिस्वामिनः। अथ तृतीयांशस्वामिनः। तत्र
 संप्रांशः ॥ ३० ॥ तत्र प्रथमश्चेत्तदा स्वस्वराशिस्वामिनः। द्वितीयश्चेत्तर्हि स्वस्वराशिः स्व
 राश्यां मकं इत्यमिनः। तृतीयश्चेत्तर्हि स्वस्वराशिः स्वराश्यां मकं इत्यमिनः। अथ पंचराश्यां राश्यां मकं इत्यमिनः ॥ ३० ॥ अथ पंचराश्यां राश्यां मकं इत्यमिनः ॥ ३० ॥

| श | स | व | म | पु | ह | श | श | स | व | म | पु | ह | श | श |
|--------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|----|----|----|----|----|----|----|
| मित्रश | श | ० | १ | ० | ० | मित्र | गृह | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ |
| मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | उच्च | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | हृद् | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | दे | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | न | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | योग | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | विश्व | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | विश्व | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |

या प्राक् स्थानस्थो विशेषेण वलीय हो ज्ञेयः । यथा आहो नवमे य हो वली तदपे हया पंचम स्थो वलिष्ठ स्तदपे हयैका दश स्थो वलिष्ठ स्तदपे हया चतुर्थ स्थ
 स्तदपे हया सप्रमस्थ स्तदपे हया दशम स्थ स्तदपे हया लग्न स्थो वलिष्ठ इत्यर्थः । इदं तु सर्वग्रह साधारणं नैसर्गिकं वस्तुमुक्तं । अथ चंद्रः सत्रिविधेषु
 तृतीय द्वितीय स्थानेषु हितेषु प्रागुक्तैषु लग्न स्थानेषु वलिष्ठो ज्ञेयः । तत्रापि यथादिमं विशेषेण वलिष्ठो ज्ञेयः । अथ कुजो भौमः सत्रिषु तृतीय
 स्थान सहितेषु लग्न स्थानेषु वलिष्ठो ज्ञेयः । तत्रापि यथादिमं विशेषेण वलिष्ठो ज्ञेयः । एवमेतं वलिष्ठग्रहं पृथक् कायांस्तौ जन्मकाले अन्यत्र
 वर्षफलमासप्रवेशादौ विहितयेत् । एवं नव संख्या का भावाः रास्ताः स्युस्तोभ्यो ये द्वादश मघ छ भावा वा ग्रहा विधितो अशुभाः स्युस्तत्रापि विधि
 तग्रहदी प्रांशमभ्ये वेदि कोरि च्छ रिपु भावा गणिता गताय दि स्युस्तदा तंतम निष्ठाः । यद्यनुदी प्रांशानति क्रम्ये मे भावाः स्युस्तदा ते पिपुभा इति दै
 वतो विहितयेत् । दी प्रांशान गेव द्यपति स्यु रिप्ये त्ररो रीतिरेक स्य तो पे कुलो पे ह्व स्थदी छे रा इति पूर्व स्थदी र्धः ॥ ५८ ॥ अथ त्रै रा शिके रा
 उपजाति कया ह त्रिराशिपा इति । प्रोच्यत इति शेषः । दिने वर्ष प्रवेशे तदा मेघा मेघा रभ्य क्रतु सौराशी नां सूर्योदयः स्वामिनः ।
 निशि वर्ष प्रवेशे तदा मेघा रभ्ये सौराश्वः स्वामिनः । यथा । दिने मेघस्य सूर्यः । दृष्ट स्युः । मिथुन स्यार्किः रातिः । कर्क स्युः ।
 । रात्रौ मेघस्ये सो गुरुः । दृष्ट स्युः । मिथुन स्युः । कर्क स्युः । अथैत एव स्वामिनो हरिभा त्सिंह द्वि लोमं विचरी ता गणपाः । मेघादी नां ये
 दिने शास्ते सिंह दी नां रात्रौ रात्रौ शास्ते सिंह दी नां दिने राः । यथा । दिने सिंह स्युः । कन्यायाश्चंद्रः । तुलाया बुधः । दृष्टि क स्युः ।

रम
 ५६

मः । तथारात्रौ सिंह स्युः । कन्यायाः शुक्रः । तुलायाः रातिः । दृष्टि क स्युः । स्वामीत्यर्थः । परेषु धनु रादिषु नित्यं दिवारात्रौ रात्रौ कुजे स्युः । इ
 यथा धनुषः रातिः । मकर स्युः । कुंभ स्युः । मीन स्युः । स्वामीत्यर्थः । अथ मर्त्यः स्युः । मेर्त्योर्निकटः । रविसितरा निपु केऽपुं सोम्यार सोर रातिः ।
 गुरुं राशं काः स्युः । दिने रातिः । गुरु रातिः । बुध भौमा को सुरेऽपार्किः शुक्र बुध माला ज कुज जी । मे । ह । मि । क । सि । क । तु । ह । व । म । कुं । मी । रातिः ।
 वानु सभा सो निपाद्या मिति । अति स्पष्ट तयि त्रै राशिके श्वर क्रम ॥ ५९ ॥ अथ स्युः । ह । व । म । कुं । मी । रातिः ।
 ग्रह द्वात्रै राशिक मथ मुस ह्वेति । पंचग्रहाधिकारा विनाधिकारं ग्रहो न वलीत्यभिधाय स्युः । ह । व । म । कुं । मी । रातिः ।
 मरा सिंह रात्रिक कर्कट भिराद्या कुजाद्या इति द्वा राशौ नां त्रै राशिके रात्व मुक्त मिह नीज । ह । व । म । कुं । मी । रातिः ।
 दिन रात्रि विभागे नापि त्रै राशिक कथं न कृतं तत्र पंचवर्गी विधाने पंचाधिकारि निस्त्वैव त्रै राशिके राग्रहात्किं न विरोधा दुभयोर्ग्रहण मुत क ।
 द्विषय विभागे स्तीति तेषां चोत्तर मनुष्य भाववर्षेणार्थ मिति ॥ स्पष्टार्थ पद्यम् । अयं तात्पर्यार्थः । सहर सिंह न स्वग्रहं स्वो ग्रहं ह्वेति प्रतिसा रा को
 तर मेव मेघादिक स्युः । द्वा राशौ नाम धी श्वरा ज्ञेयाः । प्रथमो भौमस्त स्यात्तुष्टः । षष्ठश्च भौमांत मिसुक्तैः पंचवर्गी विधानार्थ मेव द्वा राशौ राशौ पय्या
 या त्रै राशिके राश्या ह्यः प्रकरणा साहित्या त्रै राशिके श्वरा अप्राकरा का इति वर्णनानि स्मर्या र्थ मेवोपयुक्तं तदिति तत्तम्
 ॥ ६० ॥ अथ स्युः । ह । व । म । कुं । मी । रातिः ।

[illegible]

[illegible]

This image shows a page from the Voynich manuscript, featuring a grid of handwritten symbols. The symbols are arranged in approximately 5 rows and 4 columns. The parchment is aged and yellowed.

२०११ ६/११

२१६१५३

११३०१५१११४

विकला

अथ नाश भास्कर स्मृत्यादि कर्मसंघर्षे उक्तं धर्मनाशे अज्ञादिगुणयेकमात्रं विनाशकं
तु यच्चैव फलं लभ्यते कोट्यका देवार्थकं स्वकीयस्या उद्देशादि कर्म प्रवेत्ता ये वं तत्
ज्यवन्तं यदं गमस्य विभेदात् त्वदेवैकोट्यं यदं यं क्रिया स्याद्दृक्कर्म फलं ॥
इति नाश भास्कर स्मृत्यादि कर्मसंघर्षे उक्तं धर्मनाशे अज्ञादिगुणयेकमात्रं विनाशकं